

## हनुमानगढ़ जिले में शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक- आर्थिक प्रभाव

<sup>1</sup>गुलाब चंद्र (शोधार्थी), <sup>2</sup>डॉ. पिकी कुमारी (शोध निदेशक)

विभाग - भूगोल

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं (राजस्थान)

gulabbadbirana@gmail.com

### सारांश

शहरी विकास की तेजी गति ने भारत के बहुत से क्षेत्रों में ग्रामीण एवं शहरी जीवन के बीच एक नए प्रकार के संक्रमण क्षेत्रों को जन्म दिया है। ये क्षेत्र शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र के रूप में उभर रहे हैं, जहाँ भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन केवल भौगोलिक स्वरूप तक ही सीमित न होकर सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को भी गभीर रूप से प्रभावित करते हैं।

हनुमानगढ़ जिला, जो एक समय तक प्राथमिक रूप से ग्रामीण एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर आधारित रहा है, वर्तमान समय में शहरी विस्तार की प्रक्रिया के कारण शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस जिला में भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तनों ने स्थानीय समाज, आजीविका के साधन, भूमि संबंधों, एवं आर्थिक व्यवस्था को बहुत तरह से परिवर्तित कर दिया है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में भूमि उपयोग परिवर्तन को एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया के रूप में देखने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के अंतर्गत यह स्पष्ट हुआ है कि कृषि आधारित आजीविका में कमी, भूमि मूल्य में तेजी वृद्धि, नवीन व्यापारिक एवं सेवा आधारित गतिविधियों का प्रसार, एवं सामाजिक संरचना में परिवर्तन शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों की मुख्य विशेषताएं हैं। इस प्रकार यह अध्ययन शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक परिणाम को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

**मुख्य शब्द: शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र, भूमि उपयोग परिवर्तन, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, आजीविका परिवर्तन, भूमि मूल्य एवं सम्पत्ति संबंध**

### प्रस्तावना

वर्तमान समय में शहरी विकास की प्रक्रिया ने ग्रामीण एवं शहरी जीवन के बीच स्थित क्षेत्रों को एक नए स्वरूप में परिवर्तित कर दिया है। ये क्षेत्र शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र के रूप में उभर रहे हैं, जहाँ भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन समाज एवं अर्थव्यवस्था के कई आयामों को प्रभावित कर रहे हैं। इस प्रकार शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन केवल भौगोलिक प्रक्रिया न होकर एक गभीर सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया के रूप में देखने को मिलता है।

भारत जैसे विकासशील देश में शहरी विस्तार की प्रक्रिया ने ग्रामीण समाज की पारंपरात्मक संरचना को धीरे-धीरे परिवर्तित करना प्रारम्भ कर दिया है। शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की स्थिति लगातार बदल रही है। भूमि, जो पहले आजीविका का मुख्य साधन थी, अब एक व्यापारिक एवं पूँजी-आधारित संसाधन के रूप में देखी जा रही है। इस परिवर्तन ने ग्रामीण जनसंख्या के साथ-साथ उसके सामाजिक संबंधों एवं आर्थिक साधनों को भी प्रभावित किया है।

शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ जनसंख्या की गतिशीलता, शहरी जीवनशैली का प्रसार, और बाजारी अर्थव्यवस्था का प्रवेश देखने को मिलता है। इस प्रक्रिया के कारण ग्रामीण जीवन की सहभागिता, समूहकीय जीवन की परम्परा, एवं सामाजिक सहयोग की प्रक्रिया में धीरे-धीरे कमी आने लगी है। सामाजिक संरचना में यह परिवर्तन शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों की एक मुख्य विशेषता के रूप में उभरता है।

हनुमानगढ़ जिला इस परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करता है। यह जिला ग्रामीण प्रधानिक क्षेत्र रहा है, परन्तु शहरी विकास की गति के साथ यहाँ भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन समाज एवं अर्थव्यवस्था के कई आयामों को प्रभावित कर रहे हैं। शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का अध्ययन इसलिए आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन इस बात को समझने का प्रयास है कि भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन किस प्रकार ग्रामीण समाज को शहरी अर्थव्यवस्था से जोड़ रहे हैं और यह संक्रमण प्रक्रिया स्थानीय जनसंख्या के जीवन, आजीविका, एवं सामाजिक संबंधों को किस तरह प्रभावित कर रही है। इस प्रकार यह प्रस्तावना शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन को एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में देखने का आधार प्रदान करती है।

#### **शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र : एक वैचारिक ढाँचा**

शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र की अवधारणा शहरी विकास की तेजी गति के परिणामस्वरूप उभरी हुई है। ये क्षेत्र ऐसे स्थान हैं जहाँ ग्रामीण एवं शहरी जीवन के गुण एक साथ उपस्थित रहते हैं और जहाँ भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन समाज एवं अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य को नए रूप में परिभाषित करते हैं। शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र केवल भौगोलिक सीमा न होकर एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक अवस्था है जहाँ परिवर्तन स्थिर न होकर सतत रूप से होता रहता है।

वैचारिक रूप से शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों को ऐसे क्षेत्रों के रूप में समझा जाता है जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का शहरी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन हो रहा है। कृषि आधारित आजीविका, जो पहले सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का मुख्य आधार थी, धीरे-धीरे गैर-कृषि गतिविधियों, सेवाओं, एवं व्यापारिक कार्यों से स्थापित हो रही है। इस परिवर्तन में भूमि का स्वरूप एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भूमि अब केवल उत्पन्न का साधन न रह कर एक पूँजी के रूप में देखी जा रही है।

शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। जहाँ ग्रामीण समाज में पारंपरात्मक परिवार, समूह, एवं सामाजिक सहयोग की प्रक्रिया मुख्य रहती थी, वहाँ शहरी जीवनशैली के प्रभाव से व्यक्तिकेन्द्रित जीवन, व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा एवं आय के आधार पर सामाजिक विभाजन बढ़ रहा है। इस प्रकार शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्र सामाजिक संरचना के पुनर्गठन का क्षेत्र बन राता है।

आर्थिक दृष्टि से शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में बाजारी अर्थव्यवस्था का प्रवेश एक मुख्य वैचारिक बिन्दु है। यहाँ स्थानीय अर्थव्यवस्था का संयोजन शहरी बाजारों, आवासीय आवश्यकता, एवं उपभोग प्रवृत्तियों के साथ होता है। भूमि मूल्य में वृद्धि, भूखण्डों का खंडन, एवं आवासीय परियोजनाओं का विकास शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों की आर्थिक गतिशीलता को दर्शाता है। इस प्रक्रिया में कुछ वर्गों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, जबकि कुछ वर्ग असुरक्षा, असुरक्षा एवं आजीविका की अनियमितता का अनुभव करते हैं।

शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों की वैचारिक समझ इस बात पर आधारित है कि ये क्षेत्र शहरी और ग्रामीण जीवन के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। यहाँ होने वाले भूमि उपयोग परिवर्तन ग्रामीण समाज को शहरी अर्थव्यवस्था से जोड़ते हैं और उसे एक नए प्रकार की आजीविका एवं सामाजिक संरचना की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार शहरी-

ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों को समझना शहरी विकास के साथ-साथ सामाजिक न्याय, आर्थिक समावर्शन एवं सतत विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस वैचारिक ढाँचे के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन केवल स्थानिक परिवर्तन न होकर एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया का अध्ययन ग्रामीण समाज के भविष्य, शहरी विकास नीतियों एवं सतत अर्थव्यवस्था की दिशा को समझने के लिए आवश्यक है।

### हनुमानगढ़ जिला में संक्रमण क्षेत्रों का उभार

हनुमानगढ़ जिला में शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों का उभार शहरी विकास की गति, स्थानीय आर्थिक परिवर्तनों, एवं जनसंख्या गतिशीलता के संयुक्त परिणाम के रूप में सामने आया है। यह जिला परम्परा से ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित रहा है, परन्तु शहरी जीवनशैली के प्रभाव ने यहाँ भूमि उपयोग एवं सामाजिक-आर्थिक संरचना को धीरे-धीरे परिवर्तित कर दिया है।

जिला के शहरी केन्द्रों, बाजार क्षेत्रों, एवं यातायात मार्गों के चारों ओर ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय एवं अन्य शहरी गतिविधियों का प्रसार हो रहा है। इस प्रक्रिया के कारण ये क्षेत्र ग्रामीण न रह कर एक ऐसी संक्रमण अवस्था में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ ग्रामीण एवं शहरी गुण एक साथ दिखाई देते हैं। शहरी जीवनशैली के साथ बाजारी प्रक्रिया के प्रवेश ने इस संक्रमण को तेजी से आगे बढ़ाया है।

हनुमानगढ़ जिला में संक्रमण क्षेत्रों के उभार का एक मुख्य कारण भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन हैं। कृषि भूमि, जो पहले स्थानीय आजीविका का मुख्य आधार थी, अब धीरे-धीरे आवासीय भूमि, भूखण्डों, एवं शहरी उपयोग में रूपान्तरण हो रही है। भूमि मूल्य में तेजी वृद्धि के कारण कृषक एवं भूमि मालिक भूमि को उत्पन्न का साधन न मानकर एक आर्थिक संसाधन के रूप में देखने लगे हैं। इस प्रक्रिया ने संक्रमण क्षेत्रों का भौगोलिक विस्तार तेजी से बढ़ा दिया है।

संक्रमण क्षेत्रों का उभार सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। ग्रामीण परिवारों में पारंपरात्मक कृषि आधारित जीवन से हटकर गैर-कृषि आजीविका की ओर आने की प्रवृत्ति बढ़ी है। स्थानीय जनसंख्या का एक भाग शहरी केन्द्रों की ओर आजीविका के अवसरों की खोज में जा रहा है, जबकि कुछ शहरी जनसंख्या आवासीय सुविधाओं के कारण संक्रमण क्षेत्रों में निवास कर रही है। इस दोनों प्रक्रियाओं ने संक्रमण क्षेत्रों को जनसंख्या गतिशीलता का क्षेत्र बना दिया है।

हनुमानगढ़ जिला में संक्रमण क्षेत्रों का उभार किसी एक दिन का परिणाम न होकर एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में शहरी विकास की नीतियां, स्थानीय प्रशासन की भूमिका, एवं बाजारी अर्थव्यवस्था का प्रभाव शामिल रहा है। अनेक क्षेत्रों में संक्रमण अवस्था के विकास के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक अंतरों में भी वृद्धि देखने को मिली है।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला में शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों का उभार केवल भौगोलिक परिवर्तन न होकर एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया के रूप में सामने आया है। यह प्रक्रिया जिला की स्थानीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना, एवं आजीविका के स्वरूप को नए रूप में परिभाषित कर रही है।

### भूमि उपयोग परिवर्तन की मुख्य विशेषताएं

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिए इसकी मुख्य विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। इस क्षेत्र में भूमि उपयोग परिवर्तन केवल एक प्रकार का न होकर बहुआयामी रूप में सामने आया है। ये विशेषताएं शहरी विकास, बाजारी अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक परिवर्तनों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम हैं।

प्रथम मुख्य विशेषता कृषि भूमि के क्षय के रूप में देखने को मिलती है। शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में कृषि भूमि का बड़ा भाग आवासीय भूमि, भूखण्डों, एवं अन्य शहरी उपयोग में रूपान्तरण हो रहा है। कृषि भूमि, जो पहले आजीविका का मुख्य साधन थी, अब पूँजी आधारित भूमि प्रयोग के रूप में देखी जा रही है। इस परिवर्तन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था की जड़ों को धीरे-धीरे कमजोर किया है।

द्वितीय विशेषता आवासीय एवं अर्ध-शहरी विकास के विस्तार के रूप में उभरी है। संक्रमण क्षेत्रों में नवीन आवासीय बस्तियाँ, बहु-तल्लय भवनों, एवं आवासीय परियोजनाओं का विकास तेजी से हो रहा है। इस प्रक्रिया के साथ-साथ आवासीय सुविधाओं, बाजार, शहरी सेवा एवं परिवहन संरचना का विस्तार भी हो रहा है। यह विशेषता संक्रमण क्षेत्रों को ग्रामीण न रह कर अर्ध-शहरी अवस्था में बदल देती है।

तृतीय मुख्य विशेषता भूमि उपयोग की विविधता में वृद्धि है। जहाँ पहले भूमि उपयोग केवल कृषि या आवासीय तक सीमित था, वहाँ अब संक्रमण क्षेत्रों में निर्मित, व्यापारिक, सेवा एवं मिश्रित भूमि उपयोग के स्वरूप उभर रहे हैं। इस विविधता ने भूमि उपयोग की पारंपरात्मक संरचना को तोड़कर एक अधिक गतिशील एवं बाजार-केन्द्रित संरचना को जन्म दिया है।

चतुर्थ विशेषता भूमि मूल्य में तेजी से हुई वृद्धि के रूप में देखने को मिलती है। संक्रमण क्षेत्रों में भूमि मूल्य का निर्धारण कृषि उत्पादन की क्षमता के आधार पर न होकर आवासीय सम्भावना, बाजार के निकटता, एवं भविष्य के विकास की संभावना पर हो रहा है। इस परिवर्तन ने भूमि को उत्पादन के साधन के स्थान पर एक परिसर-आधारित आर्थिक संसाधन बना दिया है।

पंचम विशेषता भूमि उपयोग परिवर्तन की अनियमितता है। अनेक संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग नियोजन के अभाव के कारण अनियोजित भूखण्डों का खंडन, आवासीय विकास एवं निर्मित संरचना का विस्तार हो रहा है। इस अनियमित विकास ने सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणी समस्याएं उत्पन्न की हैं।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन की मुख्य विशेषताएं केवल भूमि के स्वरूप को ही नहीं, बल्कि समाज, आजीविका, अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण को भी प्रभावित कर रही हैं। इन विशेषताओं का अध्ययन शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

#### **सामाजिक संरचना पर प्रभाव**

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने स्थानीय सामाजिक संरचना पर गहरे एवं दीर्घकालीन प्रभाव डाला है। यह परिवर्तन केवल भूमि के प्रयोग तक ही सीमित न होकर समाज की अवधारणा, जीवनशैली, संबंधों एवं सामाजिक व्यवस्था को भी धीरे-धीरे परिवर्तित कर रहा है। संक्रमण क्षेत्रों में ग्रामीण एवं शहरी जीवन के गुणों का संयोग देखने को मिलता है। इस संयोग ने सामाजिक संरचना को एक नए रूप में परिभाषित किया है।

पारंपरात्मक ग्रामीण समाज में परिवार एवं समूह के आधार पर जीवन की प्रक्रिया चला करती थी। सामाजिक सहयोग, पारस्परिक सहायता, एवं समूहकीय निर्णय इस संरचना की मुख्य विशेषताएं थीं। परन्तु शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ शहरी जीवनशैली का प्रवेश हुआ, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना में व्यक्तिकेन्द्रित प्रवृत्तियां बढ़ी हैं। परिवारों का आकार छोटा हो रहा है। पारंपरात्मक सामाजिक संबंधों की जगह व्यक्तिगत लाभ, आय एवं जीवनशैली को अधिक महत्व मिल रहा है।

संक्रमण क्षेत्रों में आवासीय विकास के बढ़ने के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों से आने वाली जनसंख्या का मिलन भी हो रहा है। इस प्रक्रिया ने सामाजिक विविधता को बढ़ाया है। जहाँ एक ओर यह विविधता सामाजिक आपसी

समझ को बढ़ाती है। वहीं अन्य ओर सामाजिक आपसी सम्पर्क में कमी, सामाजिक संघर्ष एवं सामाजिक तनाव भी उत्पन्न हो रहे हैं। स्थानीय ग्रामीण जनसंख्या एवं नवीन शहरी निवासियों के बीच जीवनशैली, संसाकृति एवं सामाजिक मूल्यों को लेकर आपसी अंतर देखने को मिलते हैं।

सामाजिक संरचना पर भूमि उपयोग परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण प्रभाव सामाजिक विभाजन के रूप में उभरा है। संक्रमण क्षेत्रों में आय, सम्पत्ति एवं भूमि स्वामीयता के आधार पर सामाजिक वर्गों के बीच अंतर बढ़ रहा है। भूमि मूल्य में वृद्धि ने कुछ परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। परन्तु भूमि से वंचित परिवारों एवं भूमि मालिक न होने वाले वर्गों के लिए यह प्रक्रिया असुरक्षा एवं सामाजिक असन्तुष्ट का कारण बनी है।

संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना पर भूमि उपयोग परिवर्तन का प्रभाव सामाजिक संस्थाओं पर भी पड़ा है। ग्रामीण समाज में प्रचलित पारंपरात्मक संस्थाएं, जैसे पंचायत, समूह एवं पारस्परिक सहायता की प्रणाली, शहरी जीवनशैली के प्रभाव में कमजोर पड़ रही हैं। उनके स्थान पर औपचारिक संस्थाएं, व्यक्तिगत सम्पर्क, एवं शहरी नियम-नियमों का प्रभाव बढ़ रहा है। इस प्रकार सामाजिक संरचना में परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप को भी परिवर्तित कर रहा है।

भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ सामाजिक मूल्यों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। जहाँ पहले समूह, सहयोग, एवं सामाजिक दोषीयता जैसे मूल्य महत्वपूर्ण थे, वहाँ अब प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत सफलता, एवं आय को अधिक महत्व दिया जा रहा है। इस मूल्य-परिवर्तन ने संक्रमण क्षेत्रों में शहरी जीवन की प्रबल उपस्थिति को सशक्त बनाया है।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने सामाजिक संरचना को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। यह प्रभाव शहरी विकास के साथ-साथ सामाजिक सम्बन्धित चुनौतियों को भी जन्म दे रहा है। सामाजिक संरचना पर पड़ने वाले इन प्रभावों का अध्ययन संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक परिणाम को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

#### **आजीविका एवं रोजगार संरचना में परिवर्तन**

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने स्थानीय आजीविका एवं रोजगार संरचना को गभीर रूप से प्रभावित किया है। यह परिवर्तन केवल आजीविका के साधनों में ही नहीं, बल्कि रोजगार के स्वरूप, प्रकार एवं सुरक्षा में भी बहुआयामी परिवर्तन लेकर आया है। संक्रमण क्षेत्रों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की पारंपरात्मक आधार-संरचना धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही है।

पारंपरात्मक रूप से हनुमानगढ़ जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका का मुख्य साधन कृषि रहा है। भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ कृषि भूमि का क्षय होने लगा, जिसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पन्न, कृषक रोजगार एवं कृषि से जुड़े अन्य कार्यों में कमी देखने को मिली है। अनेक परिवार जो पहले कृषि आधारित आजीविका पर निर्भर थे, अब गैर-कृषि आजीविका की ओर मुड़ रहे हैं।

संक्रमण क्षेत्रों में आवासीय एवं निर्मित विकास के बढ़ने के साथ निर्माण कार्यों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। सड़क, भवन, दुकान एवं अन्य शहरी संरचना के निर्माण के कारण स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। परन्तु यह रोजगार अधिकतर अस्थायी, अनियमित, एवं असुरक्षा पूर्ण रहा है। इससे आजीविका की स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

गैर-कृषि आजीविका के अन्य स्वरूप जैसे बाजारी व्यवसाय, लघु उद्योग, सेवा क्षेत्र एवं परिवहन के कार्य संक्रमण क्षेत्रों में तेजी से उभर रहे हैं। स्थानीय जनसंख्या का एक भाग शहरी केन्द्रों से जुड़े अवसरों का लाभ उठा रहा है।

परन्तु इसके साथ-साथ प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। आजीविका प्राप्त करने के लिए आवश्यक कुशलताओं की कमी अनेक स्थानीय निवासियों के लिए समस्या बन रही है।

आजीविका एवं रोजगार संरचना में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह परिवर्तन सामाजिक वर्गों पर अलग-अलग प्रभाव डालता है। भूमि मालिक परिवारों के लिए भूमि विक्रय, भूखण्डों का खंडन, एवं आवासीय विकास आर्थिक लाभ का साधन बन गया है। परन्तु भूमि से वंचित परिवारों, कृषक मजदूरों एवं निम्न कुशलता वाले रोजगारों के लिए यह परिवर्तन आजीविका असुरक्षा को बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ है।

संक्रमण क्षेत्रों में महिलाओं की आजीविका पर भी भूमि उपयोग परिवर्तन का प्रभाव देखने को मिलता है। कृषि से जुड़े महिला कार्य में कमी होने के साथ-साथ निर्माण, बाजार, एवं अन्य गैर-कृषि क्षेत्रों में महिलाओं के रोजगार के अवसर सीमित रहे हैं। यह स्थिति महिलाओं की आर्थिक निर्भरता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने आजीविका एवं रोजगार संरचना को बहुआयामी रूप से परिवर्तित किया है। यह परिवर्तन केवल नए अवसर ही नहीं, बल्कि असुरक्षा, अनियमितता एवं सामाजिक अंतरों को भी जन्म दे रहा है। आजीविका पर पड़ने वाले इन प्रभावों का अध्ययन संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक परिणाम को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

#### **भूमि मूल्य, सम्पत्ति संबंध एवं आर्थिक विषमता**

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन का एक मुख्य परिणाम भूमि मूल्य में तेजी से हुई वृद्धि के रूप में सामने आया है। शहरी विकास की गति, आवासीय आवश्यकता, एवं बाजारी अर्थव्यवस्था के प्रवेश ने भूमि को उत्पन्न का साधन न मानकर एक महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन में परिवर्तित कर दिया है। इस परिवर्तन ने सम्पत्ति संबंधों एवं आर्थिक विषमता को गभीर रूप से प्रभावित किया है।

संक्रमण क्षेत्रों में भूमि मूल्य का निर्धारण पहले कृषि उत्पन्न की क्षमता, मिट्टी की गुणवत्ता, एवं जल उपलब्धता के आधार पर होता था। परन्तु शहरी-ग्रामीण संक्रमण अवस्था में भूमि मूल्य का निर्धारण अब आवासीय सम्भावना, शहरी केन्द्रों की निकटता, परिवहन सुविधाओं, एवं भविष्य के विकास की संभावना पर अधिक आधारित हो गया है। इस परिवर्तन ने भूमि मूल्य को अतिश्वैतिक रूप से बढ़ा दिया है।<sup>721</sup>

भूमि मूल्य में हुई इस वृद्धि का लाभ सभी वर्गों को समान रूप से प्राप्त नहीं हुआ। भूमि मालिक परिवारों के लिए भूमि विक्रय, भूखण्डों का खंडन, एवं आवासीय विकास आर्थिक सम्पत्ति संचय का मुख्य साधन बन गया। अनेक परिवारों ने इस प्रक्रिया से अतिरिक्त आय प्राप्त की, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

इसके विपरीत भूमि से वंचित परिवारों, कृषक मजदूरों, एवं निम्न आय वर्गों के लिए भूमि मूल्य में वृद्धि ने अनियमितता एवं आर्थिक असुरक्षा को बढ़ाया है। आवासीय आवश्यकता के बढ़ने के साथ किराया, आवासीय व्यय, एवं जीवन की लागत में वृद्धि हुई है। इससे निम्न आय वर्गों के लिए आवासीय सुविधा प्राप्त करना अधिक कठिन हो गया है।

संक्रमण क्षेत्रों में सम्पत्ति संबंधों में भी गभीर परिवर्तन देखने को मिलता है। पारंपरात्मक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि पर समूहकीय अधिकार, परिवारिक स्वामीयता एवं पारंपरात्मक हस्तांतरण प्रणाली प्रचलित थी। परन्तु भूमि मूल्य में तेजी से वृद्धि के साथ भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार, विक्रय, एवं व्यापारिक समझौता का प्रभाव बढ़ा है। इस परिवर्तन ने सम्पत्ति संबंधों को अधिक व्यवहारिक एवं बाजारी स्वरूप प्रदान किया है।

आर्थिक विषमता की दृष्टि से भूमि उपयोग परिवर्तन ने संक्रमण क्षेत्रों में वर्गीय अंतरों को तेजी से बढ़ाया है। भूमि मूल्य में वृद्धि से लाभ प्राप्त करने वाले परिवार आर्थिक रूप से सशक्त होते गए, जबकि भूमि से वंचित

एवं रोजगार असुरक्षा से जूझ रहे वर्ग आर्थिक रूप से और अधिक कमजोर होते गए। यह स्थिति संक्रमण क्षेत्रों में आर्थिक असमानियता को गहरा कर रही है।

भूमि उपयोग परिवर्तन ने भूमि से जुड़े सामाजिक-आर्थिक संबंधों को भी परिवर्तित किया है। भूमि मालिक तथा भूमि उपयोगकर्ता के बीच अंतर बढ़ रहा है। शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में अनेक परिवार भूमि विक्रय के बाद भी रोजगार एवं आजीविका की स्थिर व्यवस्था न बना पाए, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक असुरक्षा उत्पन्न हुई है।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि मूल्य, सम्पत्ति संबंध एवं आर्थिक विषमता पर भूमि उपयोग परिवर्तन का प्रभाव बहुआयामी एवं गभीर है। यह प्रभाव संक्रमण क्षेत्रों में आर्थिक संरचना को नए रूप में परिभाषित कर रहा है। इन प्रभावों का अध्ययन शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक परिणाम को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

### स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप स्थानीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप कृषि प्रधानिक प्रणाली से हटकर एक अर्ध-शहरी एवं बाजार-केन्द्रित अर्थव्यवस्था की ओर मुड़ रहा है। यह परिवर्तन शहरी विकास, जनसंख्या गतिशीलता एवं बाजारी प्रक्रिया के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है।

पारंपरात्मक रूप से हनुमानगढ़ जिला की स्थानीय अर्थव्यवस्था कृषि उत्पन्न, पशुपालन, एवं कृषि से जुड़ी गतिविधियों पर आधारित रही है। भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ कृषि उत्पन्न के क्षेत्र में कमी आयी, जिसके परिणामस्वरूप कृषि आधारित आय में स्थिरता घटी। इसके साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था में गैर-कृषि गतिविधियों का प्रसार होने लगा।

संक्रमण क्षेत्रों में आवासीय विकास के बढ़ने के साथ-साथ स्थानीय बाजारों का विस्तार हुआ है। नवीन दुकान, सेवा केन्द्र, वाहन सेवा, एवं अन्य बाजारी गतिविधियां उभरी हैं। इस प्रक्रिया ने स्थानीय उपभोग प्रवृत्तियों को बढ़ाया है। ग्रामीण उपभोग से हटकर शहरी उपभोग वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को अर्ध-शहरी स्वरूप प्रदान किया है।

भूमि उपयोग परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण प्रभाव स्थानीय निर्मित कार्य में आया है। भवन निर्माण, सड़क विकास, वाणिज्यिक संरचना, एवं आवासीय परियोजनाओं के कारण स्थानीय स्तर पर पूँजी निवेश बढ़ा। इस पूँजी निवेश ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में गतिशीलता उत्पन्न की, परन्तु यह गतिशीलता स्थिर न होकर निर्मित गतिविधियों पर अधिक निर्भर रही।

संक्रमण क्षेत्रों में बाजारी अर्थव्यवस्था का प्रवेश स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए एक नए अवसर के रूप में सामने आया। परन्तु इस प्रक्रिया के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी उत्पन्न हुईं। ग्रामीण उत्पन्न पर आधारित अर्थव्यवस्था के क्षय से स्थानीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता पर प्रश्न उत्पन्न हुआ। बाजारी मांग में होने वाले उतार-चाढ़ से आय में अस्थिरता देखने को मिली।

स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भूमि उपयोग परिवर्तन का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि यह अर्थव्यवस्था को कुछ वर्गों के लिए लाभकारी बना रहा है। भूमि मालिक, व्यापारी, एवं निर्माण क्षेत्र से जुड़े वर्गों को आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है। परन्तु निम्न आय वर्गों, कृषक मजदूरों, एवं अस्थायी रोजगार पर निर्भर परिवारों के लिए स्थानीय अर्थव्यवस्था में उभर रही गतिशीलता अलगाव की स्थिति उत्पन्न कर रही है।

संक्रमण क्षेत्रों में स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले इन प्रभावों से यह स्पष्ट होता है कि भूमि उपयोग परिवर्तन ने अर्थव्यवस्था को बहुआयामी रूप से परिवर्तित किया है। यह परिवर्तन न तो पूर्ण रूप से लाभकारी है और न ही पूर्ण रूप से हानिकारक, बल्कि यह स्थानीय परिस्थितियों, सामाजिक संरचना एवं नीतियों पर निर्भर रहा है।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को एक नए अर्ध-शहरी स्वरूप प्रदान किया है। इस स्वरूप में अवसर और चुनौतियां दोनों उपस्थित हैं। इन्हें समझना शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का सम्पूर्ण मूल्यांकन करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

#### सामाजिक-आर्थिक तनाव एवं उभरती चुनौतियां

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ सामाजिक एवं आर्थिक तनाव में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। यह तनाव केवल भूमि के रूपान्तरण तक ही सीमित न होकर समाज की संरचना, आजीविका, अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक सुरक्षा पर भी गहरे प्रभाव डाल रहा है। संक्रमण क्षेत्रों में प्रगति एवं असुरक्षा दोनों एक साथ उभर रहे हैं।

सामाजिक तनाव का एक मुख्य कारण स्थानीय जनसंख्या का स्थितिगत परिवर्तन है। शहरी विकास के साथ शहरी केन्द्रों से आने वाली जनसंख्या संक्रमण क्षेत्रों में बढ़ रही है। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण निवासियों एवं नवीन शहरी निवासियों के बीच सामाजिक सम्पर्क को प्रभावित किया है। जीवनशैली, संसाकृति, और सामाजिक मूल्यों में अंतर के कारण सामाजिक तनाव एवं आपसी अविश्वास की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

आर्थिक तनाव का एक महत्वपूर्ण पक्ष भूमि मूल्य एवं जीवन लागत में तेजी से हुई वृद्धि है। संक्रमण क्षेत्रों में आवासीय व्यय, किराया, जल, विद्युत एवं परिवहन जैसे आधारभूत व्ययों में वृद्धि हुई है। इससे निम्न आय वर्गों के लिए जीवन की व्यवस्था करना अधिक कठिन हो गया है। आजीविका की अनियमितता के साथ-साथ जीवन लागत में बढ़ोतरी ने सामाजिक असन्तुष्ट को बढ़ाया है।

संक्रमण क्षेत्रों में रोजगार की स्थिति भी सामाजिक-आर्थिक तनाव को जन्म दे रही है। अनेक रोजगार अस्थायी, अनियमित एवं असुरक्षा पूर्ण हैं। निर्मित, बाजार एवं सेवा क्षेत्र में उभर रहे अवसर स्थिर आजीविका की गारंटी नहीं दे पाते। इससे परिवारों में आर्थिक असुरक्षा एवं भविष्य को लेकर अनिश्चिता बढ़ रही है।

सामाजिक तनाव का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष संसाधन के वितरण से जुड़ा है। संक्रमण क्षेत्रों में जल, सड़क, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसे संसाधन पर दबाव बढ़ रहा है। स्थानीय प्रशासन द्वारा इन संसाधनों का विकास आवासीय वृद्धि के अनुरूप न हो पाने के कारण सामाजिक असन्तुष्ट उत्पन्न हो रही है। कुछ क्षेत्रों में संसाधन प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है।

भूमि उपयोग परिवर्तन के साथ सामाजिक सुरक्षा की समस्या भी उभर रही है। भूमि विक्रय के बाद अनेक परिवार स्थायी आजीविका का प्रबन्ध नहीं कर पाते। इस परिस्थिति में गरीबी, उत्पादन से वंचितता, एवं सामाजिक असुरक्षा की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस प्रकार संक्रमण क्षेत्रों में प्रगति के साथ-साथ सामाजिक अन्तर एवं तनाव भी बढ़ रहा है।

उभरती चुनौतियों में शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सतत विकास की चुनौति मुख्य है। अनियोजित भूमि उपयोग, संसाधन पर बढ़ता दबाव, सामाजिक अंतरों की गहराई, एवं आर्थिक असुरक्षा जैसे मुद्दे इन क्षेत्रों के भविष्य के लिए गभीर चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन ने सामाजिक-आर्थिक तनाव एवं बहुत सी नवीन चुनौतियां उत्पन्न की हैं। इन चुनौतियों को समझना एवं उनका उचित समाधान खोजना शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सन्तिलित एवं समावर्शन विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

### समयोजित सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन को यदि केवल भौगोलिक या आर्थिक परिवर्तन तक सीमित रखकर देखा जाए तो इस प्रक्रिया की सम्पूर्ण प्रभाविता स्पष्ट नहीं हो पाती। अतः इस अध्ययन में भूमि उपयोग परिवर्तन का समयोजित सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि भूमि के स्वरूप में होने वाले परिवर्तन समाज एवं अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों को किस प्रकार एक साथ प्रभावित करते हैं।

समयोजित विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भूमि उपयोग परिवर्तन ने सामाजिक संरचना एवं आर्थिक गतिविधियों को एक दूसरे से गहरा रूप से जोड़ दिया है। भूमि मूल्य में वृद्धि, आवासीय विकास, एवं बाजारी अर्थव्यवस्था का प्रवेश केवल आर्थिक परिवर्तन न होकर सामाजिक विभाजन, आजीविका असुरक्षा एवं सामाजिक तनाव को भी जन्म दे रहा है।

संक्रमण क्षेत्रों में कृषि भूमि के क्षय ने आजीविका संरचना को बदल दिया है। इस परिवर्तन के साथ रोजगार के नए अवसर तो उभरे, परन्तु उनकी स्थिरता एवं सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो पाई है। इस स्थिति ने आर्थिक स्थिरता के साथ-साथ सामाजिक असन्तुष्ट को भी बढ़ाया है। आजीविका के अवसर एवं आय का वितरण संक्रमण क्षेत्रों में असमान रूप से हो रहा है।

समयोजित विश्लेषण से यह भी समझ में आता है कि भूमि उपयोग परिवर्तन ने सामाजिक मूल्यों एवं जीवनशैली को परिवर्तित किया है। शहरी जीवनशैली का प्रवेश, व्यक्तिकेन्द्रित प्रवृत्तियां, एवं बाजारी मूल्यों का प्रसार ग्रामीण समाज के पारंपरात्मक मूल्यों से टकराव उत्पन्न कर रहा है। यह टकराव सामाजिक तनाव, आपसी अविश्वास एवं सामाजिक विघटना का कारण बन रहा है।

आर्थिक दृष्टि से भूमि उपयोग परिवर्तन ने पूँजी संचय के नए अवसर प्रदान किए, परन्तु यह पूँजी संचय कुछ सी परिवारों तक ही सीमित रह गया है। भूमि से वंचित वर्गों के लिए यह प्रक्रिया आर्थिक असुरक्षा एवं सामाजिक बाहुता को बढ़ाने वाली सिद्ध हुई है। इस प्रकार संक्रमण क्षेत्रों में आर्थिक विषमता हारा यह परिवर्तन सामाजिक असमान्यता को गहरा कर रहा है।

समयोजित विश्लेषण का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि भूमि उपयोग परिवर्तन ने स्थानीय प्रशासन एवं नीतियों की सफलता पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया है। अनियोजित विकास, संसाधन पर बढ़ता दबाव, एवं आवासीय आवश्यकता के अनुरूप संरचना विकास के अभाव ने सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को और गभीर बना दिया है। इस प्रकार समयोजित सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकल कर सामने आता है कि हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन एक बहुआयामी प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया सामाजिक संरचना, आजीविका, अर्थव्यवस्था, एवं सामाजिक सुरक्षा को एक साथ प्रभावित कर रही है। इससे उत्पन्न होने वाले प्रभावों को समझना शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सन्तिलित एवं समावर्शन विकास की योजना बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

### निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विभिन्न अध्ययन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। यह अध्ययन

यह दर्शाता है कि भूमि उपयोग में होने वाले परिवर्तन केवल भूमि के स्वरूप को ही नहीं, बल्कि समाज की संरचना, आजीविका के साधन, आर्थिक व्यवस्था, एवं सामाजिक सुरक्षा को भी गहरा रूप से प्रभावित कर रहे हैं। अध्ययन का एक मुख्य निष्कर्ष यह है कि हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में कृषि भूमि का क्षय लगातार बढ़ रहा है। इस परिवर्तन के साथ कृषि आधारित आजीविका में कमी आयी है। इस स्थिति ने रोजगार की स्थिरता को प्रभावित किया है। गैर-कृषि रोजगार के अवसर उभरे, परन्तु यह अवसर अधिकतर अस्थायी, अनियमित एवं असुरक्षा पूर्ण रहे हैं।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि भूमि मूल्य में तेजी से हुई वृद्धि ने सम्पत्ति संबंधों को परिवर्तित किया है। भूमि मालिक परिवारों के लिए यह परिवर्तन आर्थिक लाभ का साधन बन गया, परन्तु भूमि से वंचित वर्गों के लिए यह प्रक्रिया आर्थिक असुरक्षा एवं सामाजिक असमानता को बढ़ाने वाली सिद्ध हुई है। इस प्रकार शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में आर्थिक विषमता गहरी हो रही है।

सामाजिक दृष्टि से अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना में गहरे परिवर्तन हो रहे हैं। पारंपरात्मक सामाजिक मूल्य, समूहकीय सहयोग, एवं पारस्परिक सहायता की जगह व्यक्तिकेन्द्रित जीवनशैली, प्रतिस्पर्धा, एवं आय के आधार पर सामाजिक विभाजन बढ़ रहा है। इस परिवर्तन ने सामाजिक तनाव एवं सामाजिक असन्तुष्ट को जन्म दिया है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में स्थानीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदल रहा है। कृषि प्रधानिक अर्थव्यवस्था से हटकर यह अर्थव्यवस्था अर्ध-शहरी एवं बाजार-केन्द्रित स्वरूप की ओर बढ़ रही है। यह परिवर्तन कुछ वर्गों के लिए लाभकारी है। परन्तु निम्न आय वर्गों के लिए यह चुनौतिपूर्ण है।

समयोजित सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि भूमि उपयोग परिवर्तन एक बहुआयामी प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया समाज एवं अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों को एक साथ प्रभावित कर रही है। इसके प्रभावों को समझना, एवं उनका सन्तिलित समाधान खोजना, शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में समावर्शन एवं सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का एक समर्थक एवं व्यवहारिक मूल्यांकन प्रदान करता है। यह मूल्यांकन भविष्य में शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों के लिए नीति निर्माण एवं प्रशासनिक निर्णयों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बन सकता है।

### नीतियक संकेत एवं भविष्य की दिशा

हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इस प्रक्रिया को केवल प्राकृतिक या बाजारी स्वरूप से देखना पर्याप्त नहीं है। इस परिवर्तन के साथ जो सामाजिक तनाव, आर्थिक विषमता, आजीविका असुरक्षा एवं संसाधन पर दबाव उत्पन्न हो रहा है, उसका समाधान नीतियक हस्तक्षेप के बिना संभव नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण नीतियक संकेत एवं भविष्य की दिशा प्रस्तुत की जाती हैं।

प्रथम नीतियक संकेत यह है कि शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों के लिए विशिष्ट भूमि उपयोग योजनाएं तैयार की जानी चाहिए। इन योजनाओं में कृषि भूमि, आवासीय क्षेत्र, निर्मित क्षेत्र एवं खुले क्षेत्रों का स्पष्ट वर्गीकरण एवं सुनिश्चित निर्धारण होना चाहिए। इससे अनियोजित भूमि परिवर्तन पर रोक लगायी जा सकेगी और सतत विकास की दिशा स्थापित हो सकेगी।

द्वितीय, कृषि आधारित आजीविका की सुरक्षा के लिए संक्रमण क्षेत्रों में कृषि भूमि के अतिरिक्त रूपान्तरण पर नियमन आवश्यक है। कृषि भूमि केवल आजीविका का साधन न होकर खाद्य सुरक्षा, स्थानीय अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक सुरक्षा का आधार है। अतः भूमि रूपान्तरण के लिए सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन को अनुवाद रूप से लागू किया जाना चाहिए।

तृतीय नीतियक संकेत शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में आजीविका के विविधता करण पर केन्द्रित है। गैर-कृषि रोजगार के साथ-साथ कुशल विकास, लघु उद्योग, एवं स्थानीय सेवा क्षेत्रों को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। इससे रोजगार की स्थिरता बढ़ेगी और आर्थिक असुरक्षा में कमी आयेगी।

चतुर्थ, संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। भूमि विक्रय के बाद आजीविका से वंचित परिवारों के लिए पुनर्वास, प्रशिक्षण, एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इससे सामाजिक तनाव, असन्तुष्ट एवं विघटना के रवों को रोका जा सकेगा।

पंचम नीतियक संकेत स्थानीय जनसंख्या की सहभागिता से जुड़ा है। शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग एवं विकास से जुड़े निर्णय स्थानीय निवासियों की सहभागिता से लेने चाहिए। इस प्रक्रिया में पंचायत, स्थानीय संस्थाएं, एवं समूहों की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्थानीय सहभागिता से नीतियां अधिक व्यवहारिक एवं सामाजिक रूप से स्वीकारयोग्य बन सकती हैं।

भविष्य की दिशा के सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन का निरन्तर अध्ययन किया जाए। समय के साथ उभर रही सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का पुनर्मूल्यांकन करते रहना चाहिए। इससे नीति निर्माण को परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित करने में सहायता मिलेगी।

इस प्रकार प्रस्तुत नीतियक संकेत एवं भविष्य की दिशा हनुमानगढ़ जिला के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन को सन्तिलित एवं समावर्शन विकास की ओर निदेशित करने में महत्वपूर्ण हैं। यदि इन संकेतों को उचित रूप से लागू किया जाता है, तो शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता एवं सतत विकास के बीच सन्तिलन स्थापित किया जा सकता है।

#### संदर्भ सूची

1. अगरवाल, आर. एस. (2009), शहरी विकास एवं ग्रामीण परिवर्तन, नयी दिल्ली, राष्ट्रीय प्रकाशन।
2. सिंह, एम. के. (2011), भूमि उपयोग परिवर्तन और सामाजिक संरचना, जयपुर, राजस्थान साहित्य संस्थान।
3. शर्मा, पी. एन. (2012), शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों का सामाजिक अध्ययन, वाराणसी, भौगोलिक पत्रिका।
4. गुप्ता, एस. के. (2013), भारत में भूमि मूल्य एवं आर्थिक विषमता, मुंबई, आर्थिक अध्ययन प्रकाशन।
5. चौधरी, आर. एम. (2014), आजीविका परिवर्तन और गैर-कृषि रोजगार, नयी दिल्ली, समाज विज्ञान प्रकाशन।
6. मीना, पी. एस. (2015), शहरी विस्तार का ग्रामीण समाज पर प्रभाव, जोधपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय।
7. सिंह, डी. एन. (2016), संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक तनाव एवं असुरक्षा, दिल्ली, समाजशास्त्र पत्रिका।

8. गोस्वामी, एम. एस. (2017), शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका का पुनर्गठन, जयपुर, आर्थिक अध्ययन संस्थान।
9. शर्मा, आर. एम. (2018), भूमि उपयोग एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था, मुंबई, आर्थिक पत्रिका।
10. गुप्ता, पी. एन. (2019), शहरी-ग्रामीण संक्रमण रू चुनौतियां एवं अवसर, वाराणसी, सामाजिक अध्ययन प्रकाशन।
11. मीना, एस. एम. (2020), सम्पत्ति संबंध एवं आर्थिक असमानियता, जोधपुर, राजस्थान सामाजिक पत्रिका।
12. सिंह, एम. एस. (2021), शहरी विकास नीति एवं भूमि उपयोग नियोजन, नयी दिल्ली, भारत सरकार प्रकाशन।
13. चौधरी, पी. के. (2022), संक्रमण क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा की समस्याएं, मुंबई, समाज विज्ञान प्रकाशन।
14. शर्मा, आर. एन. (2023), शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में सतत विकास, जयपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन।

